Toppersnotes
Unleash the topper in you

MP-TET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

MADHYA PRADESH PROFESSIONAL EXAMINATION BOARD

उच्च प्राथमिक स्तर (कला वर्ग)

भाग – 3

बाल विकास – शिक्षण विधि एवं सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

बाल विकास एवं अध्ययन

1. शिक्षा मनोविज्ञान 1
2. अधिगम (सीखना) 6
3. बाल विकास 18
4. व्यक्तित्व 27
5. बुद्धि 36
6. अभिप्रेरणा 43
7. व्यक्तिगत विभिन्नता 47
8. Trick – 53
   - बुद्धि के सिद्धांत
   - बाल विकास
9. समाजीकरण 59
10. one linear question 61
11. Pschology की Books और उनके लेखक 80
12. मनोविज्ञान के सिद्धांत व प्रतिपादक 83
13. शिक्षण विधियाँ 87

सामाजिक विज्ञान

इतिहास (History)

1. सिन्धु घाटी की सभ्यता 89
2. वैदिक सभ्यता 94
3. जैन धर्म 100
4. बौद्ध धर्म 101
5. वैष्णव धर्म 102
6. शैव धर्म 102
7. ईसाई धर्म 102
8. मुस्लिम धर्म 103
9. मगध राज्य का उदय 103
10. मौर्य साम्राज्य 105
11. मौर्यत्तर काल 107

12. गुप्त काल 108
13. गुप्तोत्तर काल 109
14. मध्यकालीन भारत 110
15. मुगल वंश 114
16. 1857 का विद्रोह 118
17. सामाजिक एवं धार्मिक सुधार आंदोलन 119

भूगोल (Geography)

1. परिचय (ब्रम्हाण्ड) 133
2. देशान्तर रेखाएँ 142
3. स्थलमंडल 143
4. भूकम्प 144
5. ज्वालामुखी 146
6. पर्वत 147
7. पठार 150
8. मैदान 151
9. मरूस्थल 152
10. झील 154
11. मिट्टियाँ 157
12. वायुमण्डल 159
13. जलमण्डल 160
14. एशिया महादीप 163
15. अफ्रिका महादीप 164
16. उत्तरी अमेरिका 165
17. दक्षिण अमेरिका 166
18. यूरोप 167
19. आस्ट्रेलिया महादीप 168
20. अण्टार्कटिका महादीप 170
21. फसलें 174

भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था (Polity)

1. संविधान स्रोत 175
2. समितायाँ 176
3. अनुसूचियाँ 177
4. मूल अधिकार 177
5. राष्ट्रपति 179

6. उपराष्ट्रपति 183
7. सुप्रीम कोर्ट 185
8. हाई कोर्ट 188
9. राजसभा 191
10. लोक सभा 194
11. राज्यपाल 197
12. विधान सभा 199
13. विधान परिषद 202
14. मुख्यमंत्री 204
15. प्रधानमंत्री/मंत्री परिषद 206
16. महान्यायावादी 208
17. महाधिवक्ता 209
18. नियन्त्रक एवं महालेखा परिक्षक (CAG) 210
19. राष्ट्रीय महिला आयोग 211
20. संघ लोक सेवा आयोग 211
21. राज्य लोक सेवा आयोग 213
22. संयुक्त लोक सेवा आयोग 213
23. SC/ST आयोग 214
24. अल्प संख्यक वर्ग आयोग 215
25. राज्य के नीति निदेशक तत्व 220
26. संविधान संशोधन 222

मध्य प्रदेश का इतिहास

1. प्राचीन मध्य प्रदेश का इतिहास 225
- प्रागैतिहासिक काल
- वैदिक काल
- महाजनपद
- मौर्य काल
- मौर्योत्तर काल
- गुप्तकाल
- गुप्तोत्तर काल

2. मध्यकालीन मध्यप्रदेश का इतिहास 232
- सल्तनत काल
- मुगल काल
- होल्कर

- सिन्धियाँ

3. 1857 की क्रान्ति एवं अन्य विद्रोह 234
4. मध्यप्रदेश कला एवं संस्कृति
    - प्रमुख संगीतकार
    - प्रमुख व्यक्तित्व

मध्य प्रदेश का भूगोल

- मध्यप्रदेश की स्थिति, विस्तार, क्षेत्रफल 241
- मध्यप्रदेश का भौगोलिक स्वरूप 243
- मध्यप्रदेश की नदियाँ 250
- मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यान 251
- मध्यप्रदेश की कृषि 252
- मध्यप्रदेश की बहुद्देशीय परियोजनाएं 253
- मध्यप्रदेश के प्रमुख उद्योग 255
- मध्यप्रदेश अनुसूचित जनजातियाँ 258
- मध्यप्रदेश के मुख्यमन्त्री 260
- मध्यप्रदेश के राज्यपाल 261
- मध्यप्रदेश के नेता प्रतिपक्ष 262
- मध्यप्रदेश में राजमार्ग 263
- मध्यप्रदेश पशुपालन 264
- मध्यप्रदेश वन सम्पदा 265
- मध्यप्रदेश के दुर्ग/किले 267
- मध्यप्रदेश के साहित्यकार एवं साहित्य 268
- मध्यप्रदेश के पर्व एवं उत्सव, लोकगीत 269
- मध्यप्रदेश की सरकारी योजनाएँ 270

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Unit-1

शिक्षा मनोविज्ञान

- Psychology शब्द की उत्पत्ति (गैरेट के अनुसार) ग्रीक/लैटिन भाषा के दो शब्द Psyche + Logos से हुई।

अर्थ

Psyche - आत्मा
Logos - अध्ययन करना

★ 16 वीं शताब्दी में सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तू तथा डेकार्टे ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना।

★ 17 वीं शताब्दी में इटली के मनोवैज्ञानिक पॉम्पोनॉजी व सहयोगी थासडरीड ने मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना।

★ 19 वीं शताब्दी में विलियम वुण्ट, विलियम जेम्स, जेम्सली टिचनर, वाइत्स आदि के द्वारा मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना।

★ 20 वीं शताब्दी में मनोवैज्ञानिक वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर मैकडूगल व थार्नडाइक आदि ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना।

Note - विलियम वुण्ट ने जर्मनी के लिपजिंग शहर में 1879 को प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला, भारत में 1915 कलकत्ता में सेन गुप्त द्वारा प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की इसलिए विलियम वुण्ट को 'प्रयोगात्मक मनोविज्ञान' का जनक माना जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

परिभाषाएँ

1) जे. एस. रॉस के अनुसार, "पहले मनोविज्ञान का अर्थ आत्मा से लगाया जाता था परन्तु यह परिभाषा अस्पष्ट है क्योंकि हम इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकते कि 'आत्मा क्या है?' अतः 16 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का अर्थ अस्वीकार कर दिया।

2) पिल्सबरी के अनुसार, "मनोविज्ञान की सबसे संतोषजनक परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।

"Psychology may most satisfactorily defined as the science of human behavior."

3) वुडवर्थ के अनुसार —

1) मनोविज्ञान व्यक्ति के पर्यावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान है।

Psychology is the science of the activities of the individual in relation to environment.

2) "मनोविज्ञान के सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया। फिर मन व मस्तिष्क का त्याग किया फिर उसने अपनी चेतना का त्याग किया और वर्तमान में मनोविज्ञान व्यवहार के विधि स्वरूप को स्वीकार करता है।"

4) मैक्डूगल के अनुसार — मनोविज्ञान व्यवहार व आचरण का विज्ञान है।

Psychology is a positive science of the conduct or behavior.

5) वाटसन का कथन –1) " तुम मुझे एक बालक दो मैं उसे वो बना सकता हूँ जो मैं बनाना चाहता हूँ।"

2) मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध, निश्चित, सकारात्मक, धनात्मक विज्ञान है।

6) रिक्नर के अनुसार –

1) मनोविज्ञान व्यवहार व अनुभव का विज्ञान है।

2) शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।

7) क्रो एवं क्रो के अनुसार – मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव सम्बन्धों का अध्ययन है।

8) N.L. मन के अनुसार –

1) मनोविज्ञान मनुष्य के अनुभव के आधार पर व्याख्या किए गए आन्तरिक अनुभव तथा बाह्य व्यवहार का विधायक विज्ञान है।

Psychology is a positive science of experience and behavior interpreted in terms of experience.

2) आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज है

9) R.H. थाउलैस के अनुसार – मनोविज्ञान मानव अनुभव एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।

Psychology is the positive science of human experience and behavior.

10) गार्डनर मर्फी के अनुसार – मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें जीवित प्राणियों की उन क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनको हम वातावरण के प्रति तैयार करते हैं।

11) बोरिंग के शब्दो में — ~~मानव~~ मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।

12) वारेन के अनुसार — मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो एक प्राणी और परिवेश में सरोकार रखता।

Psychology is the science which deals with the mutual interrelation between an organism and environment.

Points to Remember of Educational psychology

★ मनोविज्ञान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रुडोल्फ गोयकल को जाता है।

★ प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक को माना जाता है।

★ शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रुसो ने किया। उन्होने अपनी पुस्तक E-mail में लिखा है — शिक्षा संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना।

Definitions :

1) स्किनर के अनुसार — 'मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'

2) क्रो एण्ड क्रो के अनुसार — शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक एक व्यक्ति के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।

3) फ्रोबेल के अनुसार — शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास करता है।

4) रुसो के अनुसार — बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए।

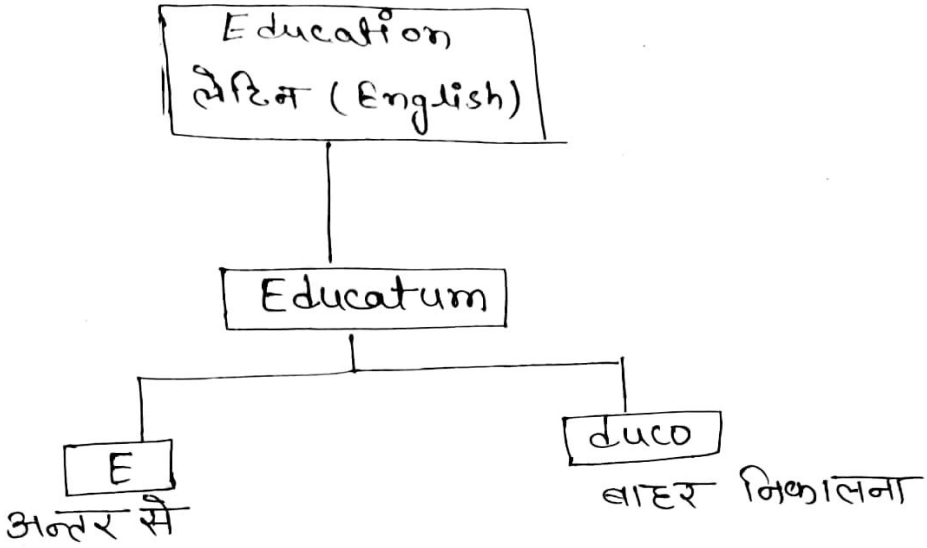

Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो अन्य शब्दों से भी मानी जाती है।

1) Educare (अर्थ – पालन पोषण करना)

2) Educere (अर्थ - आगे बढ़ाना)

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति –

1) शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।

2) इसमें नियम व सिद्धान्त का प्रयोग किया जाता है। जो कि सार्वभौमिक होते हैं।

3) शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

4) शिक्षा मनोविज्ञान एक सकारात्मक (विधायक) विज्ञान है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

सिन्धु घाटी सभ्यता

[2350 ई०पू० - 1750 ई०पू०]

सिन्धु घाटी सभ्यता

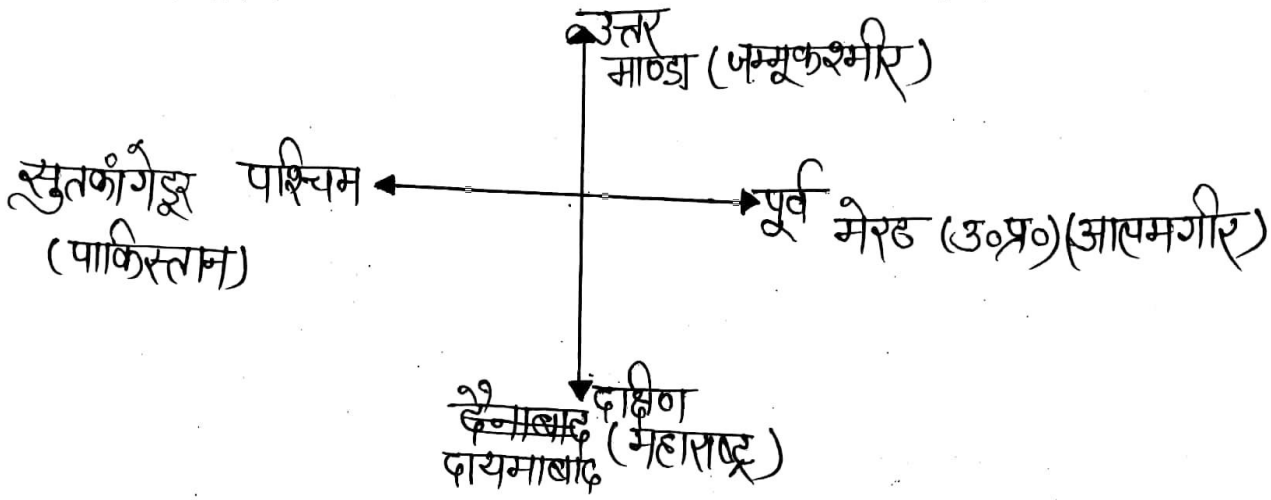

- सिन्धु सरस्वती
- हड़प्पा सभ्यता
- ताम्र युगीन या कास्य युगीन

* सन् 1921 ई० में महानिदेशक जॉन मॉर्शल के नेतृत्व में दयाराम सहानी ने हड़प्पा की खोज की।
* सन् 1922 ई० में रखालदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की। (मोहन जोदड़ो सबसे बड़ी सभ्यता में एक मानी गई)
* मोहनजोदड़ो को मृतकों का टीला कहा जाता है।
* हड़प्पा सभ्यता वर्तमान में तीन देशो में साक्ष प्रकट करती है।
  1] पाकिस्तान 2] अफगानिस्तान 3] भारत
* सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

1] हड़प्पा ⇒ सिन्धु सभ्यता में यह स्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त में माण्टगोमरी जिले में रावी नदी बॉये तट पर स्थित है।

* इसकी खोज सन् 1921 ई० में जॉन मार्शल के नेतृत्व में दयाराम सहानी ने की थी।
* हड़प्पा 5 K.M के इर्द गिर्द फैला हुआ था।
* इस स्थल पर दक्षिण दिशा से समाधीयाँ प्राप्त हुई। जिसे R-37 नाम दिया गया था।
* हड़प्पामेंस्वास्तिक चिन्ह का उल्लेख मिलता है।

मोहनजोदड़ो → * यह सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के दाँये तट पर इस स्थल की खोज की है।

* मोहन जोदड़ो को प्रेतो या मृतको का टीला कहा जाता है।
* इसे सिन्धु का बाग भी कहा जाता है।
* इस स्थल से विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है। जिसकी :-

लम्बाई → 11.88मी० चौ० → 7.01मी ऊँ० → 2.43मी०

* मोहन जोदड़ो से एक विशाल अन्नागार प्राप्त हुआ जो सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
* इसकी लम्बाई 45.71मी० और चौड़ाई 15.23मी० थी।
* हड़प्पा और मोहनजोदड़ो एक दूसरे से 483 Km दूर स्थित सिन्धु नदी से जुड़े हुये थे।
* पिग्गट ने मोहन जोदड़ो और हड़प्पा को जुड़वाँ राजधानी कहा था।

चन्हूदड़ो → * सन् 1931 में एन० जी० मजूमदार ने इसकी खोज की थी।
* यहाँ पर झूकर और झांकर संस्कृति विकासित हुई।
* वैज्ञानिक मैके ने यहाँ मनका बनाने का कारखाना खोजा।
* चन्हूदड़ो में बिल्ली का पीछा करते हुये कुत्ता के पन्जो का निशान ईंटो पर मिले है।
* यहाँ से लाली, काजल तथा उस्तरा प्राप्त हुआ है।
* चन्हूदड़ो से पाषणनुमा नालियाँ भी प्राप्त हुई है।

लोथल → * सन् 1954 में S.R Rao ने लोथल की खोज की।
* यह शहर अहमदाबाद में भोगवा नदी के तट पर स्थित था।
* इस शहर से सती प्रथा के साक्ष्य मिले है।
* लोथल से रंगाई कुण्ड भी मिला था।

* कालीबंगा → *इसकी खोज सन् 1951 में अमलानन्द घोष ने की थी।
* यहाँ से काली काँच की चूड़ियाँ और जुते हुये खेत मिले।
* यहाँ युगल समाधान मिला है। (पत्नी, पति)

रोपड़ → * यह स्थान भारत में पंजाब प्रान्त में सतलज नदी के बाँये तट पर स्थित है।
* इसकी खोज 1953 से 1956 ई० में यशवन्त शर्मा ने की थी।
* रोपड़ से मनुष्य के शव के साथ पालतू कुत्ते के दफनाये जाने प्रमाण मिला है।
* रोपड़ से ही चावल के स्रोत मिले है

कोटदीजी → * इसकी खोज सन् 1935 ई० में घुर्ये ने की थी।
* कोटदीजी से पत्थर के औजार मिले है।

राखीगढ़ी → * यह हरियाणा के घग्घर नदी पर स्थित है
* इसकी खोज 1969 में सूरज भान ने की थी।
* यह सैन्धव वासियो का सबसे बड़ा नगर था।

सुरकोटदा → * इसकी खोज सन् 1964 में जे० पी जोशी ने की थी।
* यहाँ से घोड़े की अस्थियाँ मिली है।
* यह गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है।
* इस स्थान से हड़ियो से भरा कलश मिला तथा अण्डाकार कब्र भी मिली है।

धौलावीरा → * यह गुजरात के कच्छ जिले में खादिर नामक द्वीप में जिससे स्थानीय लोग 'बैठ' के नाम से जानते है।
* इसकी खोज सन् 1966 से 1968 में जेपी जोशी ने की थी।
* धोला का अर्थ सफेद होता है तथा वीरा का अर्थ कुँआ होता है
* अतः यह एक पुराना कुँआ है जिसका नाम धौलावीरा पड़ गया है

वनवाली → * यह हरियाणा के हिसार जिले में स्थित है जो घग्घर नदी के तट पर स्थित है।
* इसकी खोज सन् 1974 में आर० एस विस्ट ने की।

सिन्धु सभ्यता में कृषि

* इनके समय फावड़ा नही था। लेकिन हल रेखा का प्रमाण मिला है।

* सिन्धु सभ्यता के लोग सिंचाई नदियों और कुँओ से किया करते थे
* जहाँ से नौ फसलो का उल्लेख मिला है। जिनमें गेहूँ और जौ प्रमुख्य फसलो में एक है।
* लोथल तथा रंगपुर से चावल के टुकडे कम प्राप्त हुये है।
* लोथल से आटा पिसने के दो पाट मिले है।
* इस सभ्यता की लिपि कुछ वैज्ञानिको के अनुसार भाव चित्रात्मक है।
* इस लिपि को ब्रोस्ट्रो फैदम कहते है। जो पंक्ति में दॉये से बॉये तथा दूसरी पंक्ति में बॉये से दॉये लिपिबद्ध है।

अन्य महत्वपूर्ण स्थल

	स्थल	क्षेत्र
*	मेहरगढ़	बलूचिस्तान (पाकिस्तान)
*	डेरा इस्माइल खान	पंजाब (पाकिस्तान)
*	राखीगढ़ी	हरियाणा
*	माण्डा	जम्मू कश्मीर राज्य
*	रोजड़ी एवं प्रभासपाटन	गुजरात

मध्य प्रदेश का इतिहास

प्राचीन काल

(पाषाण काल)
(क) पूर्व पाषाण काल
(क) पुरापाषाण काल या निम्न पूर्व पाषाण काल –

- पुरापापाण काल के कुछेक अवशेष मध्य भारत से प्राप्त हुए हैं । वर्तमान मध्यप्रदेश में सीधी, खण्डवा एवं मंदसौर को पुरापाषाण कालीन युग का माना जाता है ।
- पुरापाषण कालीन मध्य प्रदेश नदी घाटियां – बेतवा नदी, सोन नदी, नर्मदा नदी । मध्य प्रदेश के प्रमुख स्थल साक्ष्य ।
- होशंगाबाद के हथनोरा नामक स्थल से होमोइरेक्टस (मानक प्रजाति) का कंकाल पाया गया है ।
- यह नर्मदा नदी घाटी में है, इसका सर्वेक्षण एच. डी. सांकलिया मैक ब्राउन, आर.बी. जोशी ने किया है ।
- नरसिंहपुर एवं आदमगढ से पुरातन जीवाश्म प्राप्त हुए हैं ।

(ब) मध्य पूर्व पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के स्थल – मण्डला, मंदसौर, नाहरगढ, सीहोर, इंदौर, भीम बैटक, सोन नदी घाटी

उच्च पूर्व पाषाण काल

- इस युग की प्रमुख विशेषता गुफा चित्रकला का विकास था ।
- मध्यप्रदेश के भीमबेटका से दो प्रकार के चित्र प्राप्त हुए हैं ।
  1. स्त्री पुरूष के चित्र
2. मैमथ (जंगली हाथी) के चित्र

- चित्रकारी में काला, लाल, पीला और सर्वाधिक नीले रंग का प्रयोग किया गया
- भीमबेटका से नीला रंग बनाने वाले पत्थर की खोज वाकणकर द्वारा 1958 ई. में की गई ।
- होशंगाबाद, आदमगढ, भोपाल के क्षेत्रों में धरमपुरी, श्यामलाहिल्स, बरखेडा, सांची उदयगिरि आदि स्थानों पर आदिम मानव के गुफा चित्र मिलते हैं ।

(ब) मध्य पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के विंध्याचल क्षेत्र की खोज कारलायक द्वारा की गई ।
- 1964 में आर.बी. जोशी ने होशंगाबाद जिले के आदमगढ से 25 हजार उपकरण खोजें ।

(स) नव पाषाण काल

- मध्य प्रदेश के स्थल जबलपुर, ऐरण, दमोह, होशंगाबाद (आमदगढ) जतकारा, सागर । ताम्र पाषाण कालीन स्थल ।
- हडप्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता के साक्ष मध्य प्रदेश से नहीं मिलते ।
- महेश्वर (महिष्मती), नागदा, (उज्जैन) केरूथल (उज्जैन) ऐरण (सागर) त्रिपुरी (जबलपुर) मध्यप्रदेश के ताम्र पाषाण कालीन स्थल हैं –
- नवदाटोली, नागदा, एवं एरण से मालवा संस्कृति (1700–1200 ई.पू.) के अवशेष मिले हैं ।
- हैहय राजा माहिष्मत ने नर्मदा किनारे माहिष्मति नगरी बसाई ।
- रामायण काल में मध्य प्रदेश के अंतर्गत दण्डकारण्यक व महाकान्तार के घने जंगल थे
- राम ने वनवास के कुछ क्षण दण्डाकारण्यक (वर्तमान छतीसगढ) में बताये थे । बाद में राम का पुत्र कुश दक्षिणी कौशल का राजा हुआ ।

वैदिक काल से गुप्त काल तक

- उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.) के समय आर्य नर्मदा घाटी तक फैले थे नर्मदा नदी के लिये रेवा या रेवात्रा शब्द का प्रयोग करते थें ।
- नर्मदा नदी पर यदु नामक कबिला तथा श्रापित पचास पुत्र महर्षि अगस्त के नेतृत्व में आकर बसे थे ।
- ऋग्वेद के दाशराज्ञ युद्ध में यदु कबिले ने भाग लिया था ।
- इच्छावाकु के पुत्र दण्डक के नाम पर दण्डकारण्यक वन (घने जंगल) का नाम पडा था । दण्डकारण्यक के वनों का उल्लेख रामायण से मिलता है ।

- दण्डकारण्यक (बस्तर) वर्तमान में छत्तीसगढ में है ।
- विध्य प्रदेश व सतपुडा के क्षेत्रों पर रामायण काल में निषाद जातियों का अधिकार था ।
- महाभारत काल में उज्जैन सांदीपनि आश्रम के लिए प्रसिद्ध था ।
- महाजनपद काल छटी शताब्दी ई.पू. में बौद्ध ग्रंथ अगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूक्त में 16 महाजनपदों का वर्णन मिलता है ।
- महाजनपद में वत्स ग्वालियर, चेदि, खजुराहो का सम्बंध मध्य प्रदेश से है ।
- महाजनपद काल में चार शक्तिशाली जनपदों में दूसरे स्थान पर अवन्ति जनपद था, जिसका संबंध आधुनिक उज्जैन से है । जिसकी दो राजधानिया थी उत्तर में उज्जैनी तथा दक्षिण में महिष्मति ।
- अवन्ति का शासक प्रद्योत था । जो कि बुद्ध का समकालीन था । प्रद्योत के निमंत्रण पर बुद्ध अपने शिष्य महाकच्चायन को भेजते है । जोकि उज्जैयनी के रहने वाले थे ।

<u>लौहयुगीन संस्कृति (1000 ठण्ब् से प्रारंभ)</u>
म.प्र. के भिण्ड, मुरैना श्योपुर, ग्वालियर क्षेत्र से साक्ष्य

<u>वैदिक युग (1500–600 ई.पू) :</u>
वस्तुतः ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.) में आर्य संस्कृति उत्तर तक सीमित थी और उत्तर वैदिक (1000–600 ई.पू.) समय में ही उसने विंध्याचल को पार कर म.प्र. में कदम रखा ऐतरेय ब्राम्हण में जस निषाद जाति का उल्लेख है, वह मध्यप्रदेश के जंगल में निवास करती थी । ऋग्वेद में 'दक्षिणापथ और रेवोत्तर' शब्द आये है । 'एतरेय ब्राहण' 'सांख्यायन श्रोतसूत्र' एवं शतपथ ब्राहण ग्रन्थों के अनुसार विश्वामित्र के पचास शापित पुत्र मालवा आकर बसे, तत्पश्चात् अत्रि पाराशर, भारद्वाज, भार्गव आदि भी आए । पौराणिक कथाओं के अनुसार कारकोट नागवंशी शासक नर्मदा क्षेत्र के शासक थे । उस समय नर्मदा का नाम रेवा था । मौनेय गंधर्वो से जब उनका संघर्ष हुआ तो अयोध्या के इक्ष्वाकु नरेश मांधाता ने अपनु पुत्र पुरूकुत्स को नागों की सहायतार्थ भेजा जिसने गंधर्वों को पराजित किया । पुरूकुत्स ने ही रेवा का नाम नर्मदा कर दिया । इसी वंश के मुचुकुन्द ने रिक्ष और परियात्र पर्वतमालाओं के बीच नर्मदा के तट पर अपने पूर्वज नरेश मांधता के नाम पर मांधाता नगरी (ओंकारेश्वर मांधाता) की स्थापना की ।

अनुश्रुति पर आधारित इतिहास : अधिकांशतया पुराणों और कुछ हद तक महाकाव्यों से इन अनुश्रुतियों का सम्बन्ध है ।

कारूष वंश : अनुश्रुति अनुसार मनुष्यों की परम्परा में अंतिम मनु ''वैवस्वत'' (जिनके समय विश्व व्यापक बाढ आयी थी) हुऐ, जिनके 10 पुत्र थे । इनमें से एक पुत्र ''कारूष'' के नाम पर कारूष वंश ने ''कारूष'' देश (वर्तमान बघेलखण्ड) पर शासन किया ।

चन्द्रवंश (ऐल साम्राज्य) : मनु वैवस्वत की पुत्री इला का विवाह सोम (चन्द्र) से हुआ था । इनके राज्य का नाम ''ऐल साम्राज्य'' हुआ जिसका आदि पुरूष सोम (पुरूरूवा) ही था । सोम या चन्द्रवंश के साम्राज्य का विस्तार बुन्देलखण्ड तक था । सोम (पुरूरूवा) के पुत्र आयु और अमावसु हुए ।

ययाति और एल राज्य का विभाजन : राजा आयु की तीसरी पीढी में चन्द्रवंशी ययाति हुआ जिसने देवयानी (शुक्र भार्गव ऋषि की कन्या) से विवाह किया । ययाति ने अपना एल साम्राज्य पांचो पुत्रों में बांट दिया । इस विभाजन में यदु को चर्मणवती (चम्बल), नेत्रवती (बेतवा) और शुक्तिमती (केन) का घाटी क्षेत्र प्राप्त हुआ और उसके नाम पर यदु या याद वंश की स्थापना हुई । दनतवक्र नमक दैतय के नाम पर 'दतिया' राज्य हुआ । श्रीकृष्ण द्वारा मारत दन्तवक्र

'गोपालकक्ष' हो गये और ग्वालियर की पहाडियों पर आ बसे इससे यह क्षेत्र गोपाल गिरी (ग्वालियर का पूर्व नाम) हो गया ।

इक्ष्वाकु वंश और दण्डकारण्य राज्य : मनु के एक पुत्र इक्ष्वाक के नाम पर इक्ष्वाकु वंश की स्थापना हुई, जिसके पुत्र ने दण्डकारण्य (बस्तर) राज्य स्थापित किया ।

<u>मान्धाता चक्रवर्ती</u> : इक्ष्वाकु वंश का प्रतापी राजा मान्धाता हुआ, जो चक्रवर्ती सम्राट था । इसके एक पुत्र पुरूकुत्सु ने मध्यभारत के नाग राजाओं को गंधर्वों के खिलाफ सहायता दी । तथा रेवा का नाम नर्मदा कर दिया ।

<u>हैहय साम्राज्य</u> : यादव वंश के संस्थापक यदु के पौत्र हैहय के नाम पर स्थापित हैहय राज्य के राजा महिष्मन्त ने एक जीते गए दुर्ग का नाम महिष्मति (महेश्वर) रखा

। इसके वंशज कृतवीर्य ने हैहय वंश के विशाल साम्राज्य को स्थापित किया ।

सहस्त्रार्जुन : हैहय वंश में ही कार्तवीय या अर्जुन या सहस्त्रार्जुन (सहस्त्रबाहू) नामक महान सम्राट हुआ, जिसकी हजार भुजाएं मानी गयी । उसने समस्त पृथ्वी को जीता और अनेक यज्ञ किए । उसने लंका के राजा रावण को भी हराया ।

राजा अवंति : अर्जुन के पुत्र जयध्वज ने अवंति (मालवा) पर राज्य किया । अंवति नाम जयध्वज के पोत्र अवंति नामक राजा के नाम पर बाद में पडा । अवंति ने ही यादवों को विदिशा से भगाया था ।

महाजनपद युग

वैदिक काल के अंतिम समय अर्थात 600 ई.पू. के लगभग भारत में 16 महाजनपद थे, अतएव इस काल को महाजनपद काल कहा जाता हैं । इनमें से दो महाजनपद–चेदि (बुंदेलखण्ड) और अवंति (उज्जैन) वर्तमान मध्यप्रदेश के क्षेत्रान्तर्गत ।

चेदि जनपद : वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र के पूर्व में विस्तारित था । इसकी राजधानी शक्तिमति थी । इसकी एक शाखा कलिंग में स्थापित हुई । खारवेल वहाँ का प्रसिद्ध शासक हुआ । चेदिवंश के राजा शिशुपाल का महाभारत में वर्णन हुआ हैं । इसका सिर कृष्ण ने अपने चक्र से काटा था । चेदि बाद में कमजोर पडा और मगध ने इसे अपने साम्राज्य में मिला लिया ।

अवंति : मध्यप्रदेश के पश्चिमी भाग में एक सशक्त महाजनपद था । अवंती को बौद्ध ग्रन्थें में अच्युतगामिनी भी कहा गया हैं । इसके दो भाग थे ।
1. उत्तरी अवंति जनपद, जिसकी राजधानी उज्जैयिनी थी तथा
2. दक्षिणी जनपद जिसकी राजधानी महिष्मति (महेश्वर) थी ।

दोनों को पृथक् करती बेतवा (वेत्रावती) नदी प्रवाहित होती थी । अवंति के दो प्रसिद्ध नगर कुररघर और सुदर्शनपुर का वर्णन अंततः मगध में मिला लिया । उस समय यहाँ का शासक नदिवर्धन था ।

त्यौथर (रीवा) : बौद्धकालीन स्तूप के खण्डहर यहा से मिले हैं ।

नन्द वंश : मगध में नन्दवंशी राजा महापद्मनन्द ने साम्राज्य विस्तार की अपनी नीति के तहत चेदी को मगध राज्य में मिला लिया था । बडवानी से नन्दवंश की मुद्राएँ प्राप्त हुई हैं ।

मौर्य युग : मौर्यों के समय भी अवंति, चेदि मगध के भाग बन रहे । सम्राट बिन्दुसार ने अपने पुत्र अशोक को अवंति का प्रांत पति बनाया गया, जिसने विदिशा की शाक्यवंशी श्री देवी या महादेवी (वैश्य की बेटी) से विवाह किया । इससे ही महेन्द्र और संघमित्रा उत्पन्न हुए । इसी अशोक ने सम्राट बनने के उपरान्त सांची के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण कराया । संभवतः महादेवी के लिए भी एक स्तूप उज्जैन में अशोक ने बनवाया था, जिसे आज "वैश्य टेकरी" के नाम से जाना जाता हैं । अशोक के लघु शिलालेख (म.प्र.) रूपनाथ (जबलपुर), अशोक का नामवाला गुर्जरा (दतिया), सारो मारो (सीहोर), पानगुराडिया (सीहोर), सांची (रायसेन) में मिलते हैं । गुर्जरा लेख में अशोक देवनामप्रिय, प्रियादस्सी का उल्लेख हैं ।

मौर्यकालीन स्तूप

- साँची का स्तूप : सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ई.पू. में साँची के बौद्ध स्तूप का निर्माण करवाया था, जो मूल रूप से ईंटों से निर्मित था । 1818 ई. में जनरल टेलर ने साँची स्तूप को खोजा ।
- तुमैन का स्तूप : तुमैन (जिला, गुना) विदिशा तथा मथुरा को जोडने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग का स्थित हैं । यहाँ से तीन मौर्यकालीन बौद्ध स्तूपों के अवशेष मिले ।
- उज्जैन का बौद्ध महास्तूप : सम्राट अशोक द्वारा अपनी पत्नी कुमार देवी के लिए उज्जैन में एक विशाल स्तूप का निर्माण करवाया गया था, जिसके अवशेष वैश्य टेकरी (कानीपुरा) नामक टील के रूप में विद्यमान हैं ।
- करसावद के स्तूप : करसावद (जिला खरगौन) में स्थित इतबर्डी नामक टीले के उत्खनन से 11 मौर्यकालीन स्तूप प्राप्त हुए हैं ।
- देउकोठार के स्तूप : देउरकोठार (जिला रीवा) में मौर्यकालीन बौद्ध स्तूप प्राप्त हुए हैं ।
- पनगुडारिया का स्तूप : पनगुडारिया (सीहोर) से भी मौर्यकालीन प्रदक्षिणापथ युक्त स्तूप प्राप्त हुआ हैं ।

- साँची (काकनादबोट) : 1818 ई. में सर्वप्रथम जनरल टेलर ने यहाँ के स्मारकों की खोज की थी 1818 ई. में मेजर कोल ने स्तूप संख्या 1 को भरवाने के साथ उसके द.प. तोरण द्वारों तथा स्तूप के तीन गिरे हुए तोरणों को पुनः खड़ा करवाया । इस प्रकार यहाँ तीन स्तूप हैं । इनमें एक विशाल तथा दो लघु स्तूप हैं ।

मौर्योत्तर युग (200 ई.पू. - 150 ई.)

नगरीय युग : मौर्यो के समय अनेक नगर विकसित हुए थे, इनमें एरण, त्रिपुरी, महिष्मती, भागिल, विदिशा, अवंति (उज्जैयिनी) एवं पद्मावती प्रमुख हैं । इस समय के आहत सिक्के (पंचमार्क) हमें उपलब्ध हुए हैं । इन सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में लेख हैं ।

शुंग काल (187-75 ई.पू.) : शुंग मूलतः उज्जैन के थे और यहाँ मौर्यो की सेवा में रहे । मौर्यों के बाद शुंग वंश ने मगध पर राज किया । इसकी स्थापना पुण्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य राजा वृहदथ की हत्या करके की । उसका पुत्र अग्निमित्र विदिशा का प्रांतपति था ।

भरहुत : शुंग द्वारा ही सतना जिले में एक विशाल स्तूप का निर्माण हुआ था । सिके अवशेष में से उसकी वेष्टिनी का एक भाग तथा तोरण भारतीय संग्रहाल कोलकाता तथा प्रयाग संग्रहालय में सुरक्षित हैं । 1875 ई. में कनिंघम द्वारा जिस समय इसकी खोज की गई थी उस समय तक इसका केवल 10 फुट लम्बा और 6 फुट चौड़ा भाग ही शेष रह गया था ।

सातवाहन वंश (50 ई.पू. - 300 ईसवी)
दक्षिण भारतीय शक्ति सातवाहनों ने कण्वों का अंत किया, लेकिन वे उत्तर के बजाय दक्षिण (महाराष्ट्र) केन्द्र से ही शासन करते रहे । इसके पराक्रमी राजा शातकर्णी की पूर्वी मालवा विजय का उल्लेख सांची में उत्कीर्ण एक लेख से होता हैं । उसके यहा मिले सिक्कों पर "सिरिसात" (शातकर्णी) उत्कीर्ण हैं । सबसे महान सातवाहन राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी (106-130 ईसवी) के सिक्के अधिक संख्या में उज्जैन आदि से मिले हैं ।

शक राज्य (50 बी.सी. - 300 ईसवी)
पश्चिम भारत में यूनानी राज्य के स्थान पर शक राज्य स्थापित हुआ । पश्चिमी चीन से भारत आने वाली शक जाति ने अपने नासिक, उज्जैन, मथुरा, पंजाब में अपने क्षत्रप राज्य स्थापित किए । मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में नासिक और उज्जैन के शक राज्य ही महत्वपूर्ण हैं, जहाँ क्रमशः शहरात और कार्द्धमक वंश के शक राज्य थे ।

मालव जाति (600 ठब - 200।क)
सिकंदर पर आक्रमण से प्रकाश में आयी मालव जाति कालांतर में मालवा में आकर बस गयी । यही उसने शासन स्थापित किया । संभवतः मालव जाति के नाम पर ही मालवा नाम पड़ा । पाणिनी ने अपने संस्कृत व्याकरण अष्टाध्यायी में मालव जाति का उल्लेख आयुधजीवी के रूप में किया ।

नागवंश
मथुरा के नागवंश की एक शाखा ने म.प्र. में शासन स्थापित किया । इसके संस्थापक वृषनाथ का सिक्का विदिशा से मिला हैं । वृषनाथ की राजधानी विदिशा थी, जिसे भीमनाग पद्मावती ले गया । समुद्रगुप्त ने अंमि नाग राजा गणति नाग को परास्त कर उसका राज्य गुप्त साम्राज्य में मिला लिया था । चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने मथुरा के नागवंश की राजकुमारी कुबेर नागा से विवाह किया था ।

गुप्तकाल
गुप्तों के समय एक बार फिर भारत का राजनीतिक एकीकरण हुआ । मध्यप्रदेश में उनके प्रतापी राजाओं की उपस्थिति और अभियान इस क्षेत्र के राजनीतिक महत्व को स्थापित करती है
जब गुप्तों का पाटलिपुत्र में उदय हो रहा था तब मध्यप्रदेश में अनेक क्षेत्रीय शक्तियाँ थी जैसे पश्चिमी मध्यप्रदेश में शक एक
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्न
1. कालीदास
2. बेतालभट्ट,
3. वराहमिहिर
4. धन्वतंरी,
5. अमरसिंह,
6. वररूचि
7. घटकर्पर
8. क्षणपक
9. शुक

अत्यंत मजबूत राज्य था । मध्यप्रदेश में आभीर, नागवंश जैसे राज्य भी शक्तिशाली थें ।

एरण (सागर) समुद्रगुप्त का स्वभोग नगर बन गया था इस प्रकार समुद्रगुप्त शक राज्य को छोड़कर शेष

मध्यप्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर चुका था। उसके सिक्के यहाँ से मिले हैं। ''कांच'' नामक सिक्के भी गुप्तों की अधिपत्यता की पुष्टि करते हैं जो विदिश से मिले हैं।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शक राज्य (उज्जैयिनी के कार्दमक वंश) का अंत कर लगभग सम्पूर्ण मध्यप्रदेश को अपने अधीन कर लिया। उसकी शक विजय ''देवीचन्द्रगुप्तम'' से और उसकी ''शकारी'' उपाधि से पता चलती हैं। सांची अभिलेख भी उसके एक दीर्घकालीन अभियान की पुष्टि करता हैं। ''देवीचन्द्रगुप्तम'' के अनुसार रामगुप्त नामक गुप्त राजा ने शक राजा से परास्त होकर अपनी पत्नी ध्रुव देवी को उसे सौंपना स्वीकार कर लिया था लेकिन उसके स्वाभिमानी भाई चन्द्रगुप्त ने शक को मारकर ध्रुवस्वामिनी को मुक्ति दिलाई और रामगुप्त का वध कर गुप्त सम्राट बना। चन्द्रगुप्त ने उज्जैयिनी को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और यही उसके दरबार में नवरत्न होते थे। उसके उत्तराधिकारी कुमारगुप्त की मन्दसौर प्रशस्ति के अनुसार उसके सामन्त बंधुवर्मा ने सूर्य मंदिर को दान दिया था। स्कंदगुप्त के समय सफेद हुणों ;भ्मंचजींस्पजमेद्ध आक्रमण का फायदा उठाकर वाकाटकों ने मालवा पर अधिकार कर लिया था लेकिन स्कन्दगुप्त ने उसे पुनः छिन लिया।

स्थान

महादेव पिपरिया (नर्मदा घाटी)

हथनोरा (नर्मदा घाटी, जिला सिहोर)

मंदसौर (चम्बल घाटी)

भीम बैटका (नर्मदा घाटी)

आदमगढ शैलाश्रय (होशंगाबाद)

प्रमुख स्थल और खोजकर्ता

<u>महत्वपूर्ण सामग्री</u>

860 औजार

नर्मदेवसिस मानव की खोपडी ब्लेडस

ब्लेड उपकरण, शैलाश्रय

25 हजार लघु पाषाण उपकरण

खोजकर्ता विद्वान

सुपेकर

एच.डी. सांकलिया, मैक ब्राउन, अरूण सोनकिया

प्रो. वाकणकर

बी.बी. मिश्रा

द्वार बी. जोशी

<u>प्राचीन नगरों के नवीन नाम</u>

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
विराटपुरी	सोहागपुर
महिष्मती	महेश्वर
इन्द्रपुट (इन्द्रप्रस्थ)	इन्दौर
कुंतलपुर	कींडिया
उज्जैयिनी	उज्जैन
भोजताल	भोपाल
धारा नगरी	धार
भथा (भरहूत)	रीवा
अंचहरा	सतना

- भारत में मानव उपस्थिति का प्रथम साक्ष्य हथनौरा (जिला सिहोर), नर्मदा घाटी से प्राप्त (5 लाख से 2.5 लाख वर्ष पूर्व के मध्य)
- खोजकर्ता : अरूण सोनकिया (1982 में) तथा अन्य
- हथनौरा (जिला सिहोर) होशंगाबाद से 20 किमी. दूर स्थित हैं।
- भारत में मानव उपस्थिति का प्रथम साक्ष्य हथनौरा (जिला सिहोर), नर्मदा घाटी से प्राप्त (5 लाख से 2.5 लाख वर्ष पूर्व के मध्य)
- खोजकर्ता : अरूण सोनकिया (1982 में) तथा अन्य
- हथनौरा (जिला सिहोर) होशंगाबाद से 20 किमी. दूर स्थित हैं।

<u>प्राचीन जनपद</u>	<u>नवीन नाम</u>
अवन्ति (अवंतिका)	उज्जैन
वत्स	ग्वालियर
चेदि	खजुराहो
अनूप	निमाड (खण्डवा)
दशार्ण	विदिशा
तुंडीकेर	दमोह
नलपूर	नरवर (शिवपुरी)

<u>मध्यप्रदेश के अन्य राजवंश</u>

वाकाटक वंश : विंध्यशक्ति द्वारा स्थापित वाकाटक राज्य मूलतः मध्यप्रदेश का राजवंश था, जो बाद में नर्मदा के दक्षिण में केन्द्रीत हो गया। विध्यशक्ति का पुराणों में विदिशा का शासक बताया गया हैं। उसके पुत्र प्रवरसेन अश्वमेघ यज्ञ किया और नागवंश से वैवाहिक संबंध स्थापित किये।

<u>औलिकर वंश</u> : प्राचीन दशपुर (मन्दसौर) में 4थी सदी ईसवी में आलिकर वंश की सत्ता स्थापित हुई। इनकी राजधानी दशपुर थी। जयवर्मन, सिहंवर्मन, नरवर्मन इसके प्रारंभिक शासक थे। एक शासक ''बंधुवर्मन'' का प्रसिद्ध